१

जीवन-चरित्र

महात्मा ग़रीबदास जी मौज़ा छुड़ानी तहसील झज्जर ज़िला रोहतक (पंजाब) में बैसाख सुदी पूनो संवत १७७४ बिक्रमी मुताबिक़ ईसवी सन १७१७ को प्रगट हुए। वह जाति के जाट धनखड़े या दलाल गोत्र के थे और पेशा जमींदारी का करते थे। अपने घर मौज़ा छुड़ानी ही में सतसंग खड़ा करके जीवों को चेताते रहे और सारी उमर गृहस्थ में रह कर ६१ बरस की उमर में भादों सुदी २ बिक्रमी संवत १८३५ मुताबिक़ ईसवी सन १७७८ को चोला छोड़ा। इस हिसाब से जान पड़ता है कि ग़रीबदासजी और महात्मा चरनदासजी एकही समय में बिराजमान थे—चरनदास जी के जन्म से चौदह बरस पीछे यह प्रगट हुए और उनके चोला छोड़ने से चार बरस पहिले गुप्त हुए।

ग़रीबदास जी के दो लड़की और चार लड़के थे। बाज़ कहते हैं कि उनके बेटों ही में से एक गद्दी पर बैठा और बाज़ों का कथन है कि उनके गुरमुख चेले सलोतजी ने गद्दी पाई। जो हो पर इस वक़्त तो यही रिवाज है कि औलाद ही को महंती मिलती है और वह गृहस्थ ही में रहा करते हैं।

ग़रीबदासजी पूरी साध गति के थे और उन्हों ने कबीर साहब को अपना गुरू धारन किया। कबीर साहब अनुमान तीनसौ बरस इनके पहिले हुए थे लेकिन ग़रीबदासजी से उन का मेला होने की बाबत कितनों का तो बिश्वास है कि सुपने में दर्शन हुए और उपदेश मिला और कुछ लोग कहते हैं कि बारह बरस की उमर में ग़रीबदासजी मौज़ा छुड़ानी में चौपे चरा रहे थे कि कबीर साहब प्रगट हुए और एक छोटी भैंस को जो कभी गाभिन नहीं हुई थी दिखला कर कहा कि इस का दूध हम को पिलाओ। ग़रीबदासजी ने जवाब दिया कि यह दूध नहीं देती जिस पर कबीर साहब बोले कि देखो तो सही ज़रूर देगी। ग़रीबदासजी ने ज्योंहीं हाथ लगाया उस छोटी भैंस के थन से दूध टपकने लगा। यह चमत्कार देख कर ग़रीबदासजी को कबीर साहब के समरथ होने का बिश्वास हुआ और उन के चरनों पर गिर कर उपदेश लिया। पहली कथा ज़ियादा समझ में आती है।

बाईस बरस की उमर में ग़रीबदासजी ने एक ग्रंथ रचना शुरू किया जिस में सत्तरह हज़ार चौपाई और साखी उनकी हैं और उसी के साथ कबीर साहब की सात हज़ार साखियाँ शामिल की हैं उन्हीं सत्तरह हज़ार कड़ियों में से इस पुस्तक के अंग और कड़ियाँ चुन कर छापी गई हैं।

ग़रीबदासजी के पन्थ के बहुत से लोग हैं और अब तक उनका वंस भी मौजूद है। मौज़ा छुड़ानी में फागुन सुदी दसमी को एक बड़ा मेला ग़रीबदासियों का उन महात्माजी का जारी किया हुआ अब तक होता है।

ग़रीबदास जी की बाबत बहुत से चमत्कार मशहूर हैं लेकिन वह सब लिखने के लायक़ नहीं हैं, सिर्फ़ दो एक चुनकर लिखे जाते हैं—

(१) एक साल सूखा पड़ा। सेवकों ने प्रार्थना की तो आप ने दया से ऐसी मौज की कि खूब मेंह बरसा। यह चर्चा दिल्ली में बादशाह के कान तक पहुंची। बादशाह पर उसी समय में एक दुशमन ने चढ़ाई की थी इस लिये बादशाह ने बड़े आदर और सतकार से बहुत से हाथी और सवार भेजकर ग़रीबदासजी को बुलाया। उन्हों ने जलूस को तो लौटा दिया और आप सादी चाल से एक घोड़ी पर चढ़ कर पाँच सेवकों के साथ दिल्ली पहुंचे। और महात्मा चरनदासजी के स्थान पर ठहर कर वहाँ से पैदल बादशाह के यहाँ गये। बादशाह ने दीनता से दुशमन से बचाने के लिये बिनती की। महात्माजी बोले कि अगर तुम तीन बातें छोड़ दो तो दुशमन तुम्हारा बाल बाँका न कर सकेगा—एक तो गोबध, दूसरे अनाज पर कर, तीसरे बहुत सी बेगमों का रखना। इस पर बादशाह के दरबारियों ने बादशाह को भड़काया कि यह फ़क़ीर हिन्दू है और अपने मत के जाल में हुज़ूर को भी फँसाया चाहता है। बादशाह ने उन नादानों की सलाह में आकर ग़रीबदासजी को मय उन के सेवकों के क़ैदख़ाने में तीन तालों में बंद कर दिया। पहरेवाले ने ताने से कहा कि देखें तो अगर सच्चे फ़क़ीर हो तो बन्दीख़ाने से निकल जाव। कुछ देर बाद महात्माजी ने ऐसी मौज की कि तीनों दरवाज़े और ताले खुल गये और वह अपने सेवकों के साथ निकल कर अपने स्थान को वापस

आये। अगले दिन जब बादशाह को ख़बर हुई तो वह लज्जित हुआ और फिर दोबारा उनको बुलाया पर वह नहीं आये। फिर बादशाह ने पाँच गाँव की जागीर देनी चाही उसके लेने से भी उन्हों ने इनकार किया।

(२) मौज़ा आसोध ज़िला रोहतक के एक साहूकार का इकलौता बेटा संतोषदास ग़रीबदासजी की महिमा सुन कर उनका चेला हुआ और कुछ दिन बाद उस की प्रार्थना पर उन्हों ने उसे साधू बना लिया। यह सुन कर उस के बाप को बड़ा क्रोध आया और ग़रीबदासजी के स्थान पर जाकर बहुत भला बुरा कह कर बोला कि तू ने मेरे बेटे को तो साधू बना लिया है अब उसकी घरवाली तेरी बहिन का क्या हाल होगा। महात्मा जी ने उसके कटु बचन के जवाब में बहुत कोमलता से कहा कि अगर तुम अपनी पतोह को मेरी बहिन बनाते हो तो वह मेरी बहिन ही होकर रहेगी। महात्मा जी के मुख से यह बचन निकलते ही उस औरत को मौज़ा आसोध में बैराग आया और अपनी चूड़ी वग़ैरह फोड़ कर साधुनी बन गई और ग़रीबदासजी की सेवा में रहने लगी।

और कथायें बहुत सी मशहूर हैं मगर मामूली सिद्धि शक्ति की हैं जो ग़रीबदासजी सरीखे साध गुरू की अपरंपार महिमा को नहीं लखातीं।

ग़रीबदासजी के पहिनने का जामा और बँधी हुई पगड़ी और धोती जूता और लोटा और कटोरी और पलँग अब तक मौज़ा छुड़ानी में उनकी समाध के स्थान पर मौजूद हैं जहाँ लोग दर्शन को जाते हैं॥

इलाहाबाद
बेलवेडियर प्रेस
२८।१०

गरीबदास जी की बानी

बंदना

नमो नमो सतपुरुष कूँ, नमस्कार गुरु कीन्ह ।
सुर नर मुनि जन साधवा, संतन सर्बस दीन्ह ॥
सतगुरु साहब संत सब, डंडौत औ परनाम ।
आगे पीछे मद्ध हूं, तिन्ह पर जा कुरबान ॥
निराकार निर्बिषयं, काल जाल भय-भंजनं ।
निर्लेपं निज निर्गुनं, अकल अनूपं सुन धुनं ॥
सोहं सुरत समायतं, सकल समाना निरत लै ।
उजल हिरंबर* हर दमं, बेपरवाह अथाह है ।
वार पार नहिं मद्धतं ॥

चेतावनी का अंग

पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया जीव ।
अंदर बहुत अँदेस था बाहर बिसरा पीव† ॥१॥

---

*हिरन्मय, निर्बिकार । †पुराणों में कथा है कि जब प्राणी गर्भ में आता है तब उसे ईश्वर का निरंतर दर्शन होता है और ईश्वर से प्रार्थना किया करता है कि इस मलाशय से मुझे बाहर कीजिये मैं प्रतिदिन आप का ध्यान किया करूँगा परन्तु बाहर आते ही संसार की माया से अज्ञानी होकर उस को भूल जाता है ।

पाना की इक बूँद सूँ आज बनाया साँच ।
राखन हारा राखिया जठर अगिन की आँच ॥२॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया साँच ।
कौड़ी बदले जात हैं कंचन साटे* काँच ॥३॥
पानी की इक बूँद सूँ साज बनाया सोध ।
तू जग में पंडित भया पढ़ा अठरहो बोध ॥४॥
धरनीधर जाना नहीं कीन्हा कोटि जतन्न ।
जल से साज बनाय कर मानुस किया रतन्न ॥५॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
गुलजारा दरसै नहीं चसमैं फिर गई धूँध ॥६॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा जल बूँद ।
नाड़ी सहस सँवारि कर लाया नख सिख गूँद ॥७॥
धरनीधर जाना नहीं जिन्ह सिरजा तन साज ।
चेत सकै तो चेतिये बिगर जायगा काज ॥८॥
पानी की इक बूँद से अजब बनाया ख्याल ।
धरनीधर जाना नहीं आय पड़ा जम जाल ॥९॥
उरध मुखी जब रहे थे तल सिर ऊपर पाँव ।
राखनहारा राखिया जठर अगिन की लाव† ॥१०॥
अस्थि चाम रग रोम सब किस ने कीया गूँध ।
उदर बीच पोषन किया बिन जननी के दूध ॥११॥
तुही तुही तुतकार थी जपता अजपा जाप ।
बाहर आकर भरमिया बहुत उठाये पाप ॥१२॥

*बाघ । †लवर ।

तुही तुही तुतकार थी ररंकार धुन ध्यान ।
जिन्ह यह साज बनाइया ताकूँ ले पहिचान ॥१३॥
वजू* उरध मुख जपै था ररंकार धुन धीर ।
वा तालिब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥१४॥
वजू उरध मुख जपै था जोनी जिंद जहान ।
बाहर मूल गँवाइया पूजत है पाखान ॥१५॥
जठर अगिन से राखिया ना साँईं गुन भूल ।
वह साहब दरहाल है क्यौं बोवत है सूल ॥१६॥
आध घड़ी की अध घड़ी आध घड़ी की आध ।
साधू सेती गोसटी† जो कीजै सो लाभ ॥१७॥
पाव घड़ी तो याद कर नीमाना सन‡ खोय ।
सतगुरु हेला देत है बिषै सूल नहिं बोय ॥१८॥
अलिफ अलह कूँ याद कर कादिर कूँ कुरबान ।
साँईं सेती तोड़ कर राखा अधम जहान ॥१९॥
अलिफ अलह कूँ याद कर जिन्ह कीन्हा यह साज ।
उस साहब कूँ याद कर पाला जल बिन नाज ॥२०॥
संसारी में आन कर कहा किया रे मूढ़ ।
सूआ सेमर सेइया लागे डौंड़े टूट ॥२१॥
सूआ सेमर सेइया बारह बरस बिसास§ ।
अंत चोंच खाली पड़ी डौंड़े बीच कपास ॥२२॥
सूआ सेमर सेइया ऐसे नर या देह ।
जम किंकर तुझ लेगया मुख में देकर खेह ॥२३॥

---

* वजू=पंचस्नाना, जप । † बात चीत । ‡ पूरा बरस । § बिस्वास ।

आदि समय चेता नहीं अंत समय अँधियार ।
मद्धु समय माया रते पाकर लिये गँवार ॥२४॥
अंत समय बीते घनी तन मन धरै न धीर ।
उस साहब कूँ याद कर जिन्ह यह धरा सरीर ॥२५॥
धूआँ का सा धौरहर बालू की सी भीत ।
उस खाविंद कूं याद कर महल बनाया सीत ॥२६॥
धूआँ केरा धौरहर यह बालू का साज ।
उस खाविंद कूं याद कर साजी गैब अवाज ॥२७॥
धूआँ केरा धौरहर बालू जेहा भेव ।
गैबी से गैबी मिलै तौ परसै दिल देव ॥ २८ ॥
गैब अजाती पिंड में जा का गैबी नावँ ।
सुन्न सनेही जानिये मढ़ी महल नहिं ठावँ ॥२९॥
भग्ति हेत गृह बँधिया माटी महल मसान ।
तैं साहब जाना नहीं भूला मूढ़ जहान ॥ ३० ॥
भग्ति हेत गृह बँधिया घन नामी घट माहिं ।
बिन सतगुरु की बंदगी साहब पावै नाहिं ॥३१॥
भग्ति हेत गृह बंधिया घन नामी घट माहिं ।
साधू जन सेये बिना साँईं पावै नाहिं ॥ ३२ ॥
भग्ति हेत काया धरी घन नामी घट बीच ।
नीब लगै नहिं नारियर भावैं परमल सींच ॥३३॥
यह माटी का महल है तासे कैसा नेह ।
जो साँईं मिल जात हैं तौ पारायन देंह ॥ ३४ ॥

यह माटी का महल है खाक मिलेगा धूर ।
साँईं के जाने बिना गदहा कुत्ता सूर* ॥ ३५ ॥
यह माटी का महल है छार मिलै छिन माहिँ ।
चार सकस† काँधे धरे मरघट कूं ले जाहिँ ॥३६॥
जार बार तन फूँकिया होगा हाहाकार ।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहैं पुकार ॥ ३७ ॥
जार बार तन फूँकिया मरघट मंडन माँड ।
या तन की होरी बनी मिटी न जम की डाँड ॥३८॥
जार बार तन फूँकिया मेटा खोज खलील‡ ।
तू जानै मैं रहूंगा यहाँ तो कछू न ढील ॥ ३९ ॥
जार बार तन फूँकिया फोकट मिटे फिराक§ ।
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु बोलै साख ॥ ४० ॥
जार बार कोइला किया होगया मरघट राख ।
छाँड़े महल मँड़ेरिया‖ क्या कौड़ी धन लाख ॥४१॥
चढ़ कर तुरँग कुदावते और पालकी फील¶ ।
ते नर जंगल जा बसे जम कूँ फेरा लील ॥४२॥
अरब खरब लौं द्रव्य है उदय अस्त बिच जाह** ।
बिन साँईं की बंदगी डूब मुए दह†† माँह ॥ ४३ ॥
अरब खरब लौं द्रव्य है रावत‡‡ कोटि अनंत ।
नाहक जग में आइया जिन्ह सेये नहिं संत ॥४४॥

---

* सुअर । † आदमी । ‡ एक भक्त जिन के विषय में कथा है कि बादशाह ने जीते जी आग में जला देना चाहा पर भगवत की दया से चिता फूल की क्यारी बन गई । § बियोग । ‖ मँढ़ई । ¶ हाथी । ** मर्तबा । †† कुंड । ‡‡ राजा ।

माया हुई तो क्या हुआ भूल रहा नर भूत ।
पिता कहैगा कौन कूँ तू बेस्या का पूत* ॥ ४५ ॥
काया माया काल हैं बिन साहब के नावँ ।
चेत सकै तो चेतिये बिन संतौं नहिं दावँ ॥ ४६ ॥
ऐसा अंजन आँजिये सूझै त्रिभुवनराय ।
काम धेनु अरु कलप बृछ घटही माँझ लखाय ॥४७॥
जोनी संकट मेटहूं जो बिसरै नहिं मोहिं ।
जिन्ह संसारी चित धरी नहीं छुड़ाऊँ वोहि ॥४८॥
लख चौरासी बंध तँ सतगुरु लेत छोड़ाय ।
जे उर अंतर नाम है जोनी बहुरि न जाय ॥४९॥
सब माया के ख्याल हैं सब माया के चोज ।
बिन साँई की बन्दगी जंगल हूैगा रोज† ॥५०॥
महसूदी‡ चौतार नर खासे पहरे खूब ।
अंत मसाने जा बसे बिना भगति महबूब ॥ ५१ ॥
जोनी संकट मेटहूं देहूं निःचल बास ।
उर अंतर में राखहूं जम की नहीं तिरास ॥५२॥
जो जन हमरी सरन है जाका हूं मैं दास ।
भगति अनाहद बन्दगी अनँत लोक परकास ॥५३॥
बेमुख प्रानी जाहिंगे दोजख दुन्द बहीर§ ।
वा कूं नर नाहिं सुमिरते जिन्ह यह धरा सरीर ॥५४॥

---

* एक संस्कृत ग्रंथ में लिखा है कि बिष्णु और महादेव के सम्बाद में बिष्णु ने कहा था कि मेरी स्त्री लक्ष्मी हरजाई है और मेरा पुत्र कामदेव उन्मद है । † रोना, बिलाप । ‡ जिस को देख कर लोग रिझाते हैं । § कुल परिवार सहित ।

इस माटी के महल में मगन भया क्यों मूढ़ ।
कर साहब की बन्दगी उस साँईं कूँ ढूंढ़ ॥५५॥
इस माटी के महल में मन बाँधी बिष पोट ।
अहरन* पर हीरा धरा ताहि सहै घन चोट ॥५६॥
काँचा हीरा किरच ह्वै नहीं सहै घन मार ।
ऐसा मन यह ह्वै रहा लेखा ले करतार ॥५७॥
हीरा घन की चोट सहि साँचे कूँ नहिं आँच ।
वह दरगह† में क्या कहै जाके सँग हैं पाँच‡ ॥५८॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु हेला दीन ।
बन बस्ती में ना रहै ले जाता जम बीन ॥५९॥
चेत सकै तो चेतिये सतगुरु कहा पुकार ।
बिना भगति छूटै नहीं बहु बिधि जम की मार ॥६०॥
संतौं सेतीं ओलने§ संसारी से नेह ।
सो दरगह में मारिये सिर में देकर खेह ॥६१॥
भग्ति गरीबी बंदगी संतौं सेतीं हेत ।
जिन्ह के नि:चल बास है आसन दीजे सेत ॥६२॥
कुटिल बचन कूँ छाँड़ि दे मान मनी कूँ मार ।
सतगुरु हेला देत जनि डूबै काली धार ॥६३॥
इस माटी के महल में नातर कीजै मोद ।
राव रंक सब चलँगे आपे कूँ ले सोध ॥६४॥
मात पिता सुत बंधवा देखें कुल के लोग ।
रे नर देखत फूँकिये करते हैं सब सोग ॥६५॥

*निहाई । †दरबार । ‡ पाँच दूत । §शिकायत ।

महल मँड़ेरी नीम सब चले कौन के साथ ।
काग़ा रौला हो रहा कछू न लागा हाथ ॥६६॥
गलताना गैबी चला माटी पिंडय जोख ।
आया सो पाया नहीं अन आये कूँ रोक ॥६७॥
यह मन मंजन कीजिये रे नर बारंबार ।
साँईं से कर दोसती बिसर जाय संसार ॥६८॥
अंत समय की बात सुन तेरा संगी कौन ।
माटी में माटी मिलै पवनहिं मिलिहै पौन ॥६९॥
ये बादर सब धुंध के मन माया चितराम* ।
दीखै सो रहता नहीं सप्तपुरी सब धाम ॥ ७० ॥
जनम जनम को मैल है जनम जनम की घात ।
जड़ नर तोहि सूझै नहीं ले चला चोर बिरात ॥७१॥
जाते कूँ नर जान दे रहते कूँ ले राख ।
सत्त सब्द उर ध्यान धर मुख सूँ कूड़ न भाख ॥७२॥
निरबानी के नाम से हिल मिल रहना हंस ।
उर मैं करिये आरती कधी न बूड़ै बंस ॥ ७३ ॥
पंछी उड़ै अकास कूँ कित कूँ कीन्हा गौन ।
यह मन ऐसे जात है जैसे बुदबुद† पौन ॥७४॥
धन संचै तो संत का और न तेरे काम ।
अठसठ तीरथ जो करै नाहीं संत समान ॥७५॥
धन संचै तो सील का दूजा परम सँतोख ।
ज्ञान रतन भाजन‡ भरो असल खजाना रोक ॥७६॥

*नक़्शबन्दी । †बुलबुला । ‡बरतन ।

दया धर्म दो मुकट हैं बुद्धि बिबेक बिचार ।
हर दम हाजिर हूजिये सौदा त्यारंत्यार ॥७७॥
नाम अभय पद निरमला अटल अनूपम एक ।
यह सौदा सत कीजिये बनिजी बनिज अलेख॥७८॥
यह संजम सैलान कर यह मन यह बैराग ।
बन बसती कितही रहो लगे बिरह का दाग ॥७९॥
रंचक नाम सँभारिये परपंची कूँ खोय ।
अंत समय आनंद है अटल भगति देउँ तोय ॥८०॥
जा घट भगति बिलास है ता घट हीरा नाम ।
जो राजापृथ्वी-पती ता घर मुक्ते* दाम ॥८१॥
साहब साहब क्या करे साहब तेरे पास ।
सहस इकीसौं† सोधि ले उलट अपूठा‡ स्वाँस ॥८२॥
गगन मँडल में रम रहा तेरा संगी सोय ।
बाहर भरमे हानि है अंतर दीपक जोय ॥८३॥
चित के अंदर चाँदना कोटि सूर ससि भान ।
दिल के अंदर देहरा काहे पूज पखान ॥८४॥
रतन रसायन नाम है मुक्ता महल मजीत§ ।
अंधे कूँ सूझै नहीं आगे जलै अँगीठ ॥ ८५ ॥
नाम बिना निबहै नहीं करनी करिहैं कोट ।
संतौं की संगत तजी बिष की बाँधी पोट ॥८६॥
झिल मिल दीपक तेज कै दसौं दिसा दरहाल ।
सतगुरु की सेवा करै पावै मुक्ता माल ॥ ८७ ॥

* बहुत । †इक्कीस हज़ार छःसै स्वाँसा दिन रात में चलती है ।
‡निर्मल । §मसजिद ।

लै का लाहा* लीजिये लै की भर ले भार ।
  लै की बनिजी कीजिये लै का साहूकार ॥ ८८ ॥
रतन खजाना नाम है माल अजोख अपार ।
  यह सौदा सत कीजिये दुगुने तिगुने चार ॥८९॥
निरगुन निरमल नाम है अवगत नाम अबंच ।
  नाम रते सो धनपती और सकल परपंच ॥९०॥
ऐसे लाहा लीजिये संत समागम सेव ।
  सतगुरु साहब एक है तीनौं अलख अभेव ॥९१॥
चेत सकै तो चेतिये कूकै संत सुमेर ।
  चौरासी कूं जात है फेर सकै तो फेर ॥ ९२ ॥
मन माया की डुगडुगी बाजत है मिरदंग ।
  चेत सकै तो चेतिये जाना तुझे निहंग† ॥ ९३ ॥
नंगा आया जगत में नंगाही तू जाय ।
  बिच कर ख्वाबी ख्याल है मन माया भरमाय ॥९४॥
फूंक फाँक फारिग किया कहीं न पाया खोज ।
  चेत सकै तो चेतिये ये माया के चोज‡ ॥ ९५ ॥
नैना निरमल नूर के बैना बानी सार ।
  आरत अंजन कीजिये डारो सिर से भार ॥९६॥

* लाभ । † नंगा (बिना अंग के) । ‡ बिलास ।

गुरुदेव के अंग

पुर पट्टन पर लोक है अदली सतगुरु सार ।
भग्ति हेत से ऊतरे पाया हम दीदार ॥ १ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला अललपच्छ की जात ।
कायां माया ना उहाँ नहीं पिंड नहिं नात ॥ २ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला उजल हिरंबर आद ।
झलका ज्ञान कमान का घालत है सर साध ॥३॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुन्न बिदेसी आप ।
रोम रोम परकास है दे हीं अजपा जाप ॥ ४ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला मगन किये मुस्ताक ।
प्याला प्रेम पिलाइया गगन मँडल गरगाप* ॥५॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैन ।
उर अंतर परकासिया अजब सुनाये बैन ॥ ६ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु की सैल ।
बजर पौरि पट खोल कर ले गया झीनी गैल ॥७॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के तीर ।
सब संतन सिरताज है सतगुरु अदल कबीर ॥८॥

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के माँह ।
सब्द सरूपी अंग है पिंड प्रान नहिं छाँह ॥ ९ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला गलताना* गुलजार ।
वार पार की मत नहीं नहिं हलका नहिं भार ॥१०॥

* मतवाला ।

ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के मंझ ।
अन्डौं आनंद पोख ही बैन सुनाये कुंज* ॥११॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
पीतम्बर तार्खा† धर्यो बानी सब्द रसाल‡ ॥१२॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
गमन किया परलोक से अललपच्छ की चाल ॥१३॥
ऐसा सतगुरु हम मिला सुरत सिंधु के नाल ।
ज्ञान जोग औ भक्ति सब दीन्ही नजर निहाल ॥१४॥
ऐसा सतगुरु हम मिला बेपरवाह अबंध ।
परम हंस पूरन पुरुष रोम रोम रवि चंद ॥ १५ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला है जिंदा जगदीस ।
सुन्न बिदेसो मिल गया छत्र मुकट है सीस ॥१६॥
सतगुरु के लच्छन कहूं मधुरे बैन बिनोद ।
चार बेद षट सास्तर कहा अठारह बोध ॥ १७ ॥
सतगुरु के लच्छन कहूं अचल बिहंगम चाल ।
हम अमरापुर ले गया ज्ञान सब्द के नाल ॥ १८ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तुरिया के रे तीर ।
सब बिद्या बानी कहै छानै नीर अरु छीर ॥१९॥
जिंदा जोगी जगत-गुरु मालिक मुरसिद पीव ।
काल कर्म लागै नहीं नहिं संका नहिं सींव§ ॥२०॥

---

* कुंज चिड़िया अपने अंडे को बैठ कर नहीं सेती बल्कि सुरत से । † टोपी । ‡ रसीली । § हद ।

जिंदा जोगी जगत गुरु मालिक मुरसिद पीर ।
दुहूँ दीन झगड़ा मचा पाया नहीं सरीर* ॥२१॥
ऐसा सतगुरु हम मिला मालिक मुरसिद पीर ।
मारा भलका† भेद से लगे ज्ञान के तीर ॥ २२ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुंज के अंग ।
झिलमिल नूर जहूर है रूप रेख नहिं रंग ॥२३॥
ऐसा सतगुरु हम मिला तेज पुंज की लोय‡ ।
तन मन अरपौं सीस हू होनी होय सो होय ॥२४॥
ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र किवार ।
अगम दीप कूं लेगया जहाँ ब्रह्म दरबार ॥ २५ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला खोले बज्र कपाट ।
अगम भूमि कूं गम करी उतरे औघट घाट ॥२६॥
ऐसा सतगुरु हम मिला मारी गाँसी सैन ।
रोम रोम में सालती पलक नहीं है चैन ॥ २७ ॥
सतगुरु भलका खैंच कर लाया बान जो एक ।
साँस उभारे सालना पड़ा कलेजे छेक ॥ २८ ॥
सतगुरु मारा बान कस कैबर§ गाँसी खैंच ।
भरम करम सब जरि गये लई कुबुधि सब ऐंच ॥२९॥
सतगुरु आये दया कर ऐसे दीन-दयाल ।
बंदि छोड़ाई बिरद‖ सुनि जठर अगिन प्रतिपाल ।३०।

---

* कहते हैं कि कबीर साहब के चोला छोड़ने पर उनके हिन्दू शिष्य चाहते थे कि शरीर को दाह करैं और मुसलमान चाहते थे कि गाड़ दें परन्तु शरीर गुप्त हो गया और इस तरह आपस का झगड़ा निबट गया । †कमान । ‡ लौ । §काँटीदार गाँसी जो घुसने पर निकलती नहीं । ‖स्तुति (चेतावनी की पहिली साखी का नोट देखो)

जठर अगिन से राखिया प्याया अमृत छीर ।
जुगन जुगन सतसंग है समझ कुटिल बेपीर ॥३१॥
जोनी संकट मेटि हैँ ऊरध मुख नहिँ आय ।
ऐसा सतगुरु सेइये जम से लेत छुड़ाय ॥ ३२ ॥
जम जोरा जा से डरे धर्मराय के दूत ।
चौदह* कोर न चंपहीं सुन सतगुरु की कूत† ॥३३॥
जम जोरा जा से डरै धर्मराय धर धीर ।
ऐसा सतगुरु एक है अदली अदल कबीर ॥३४॥
जम जोरा जा से डरै मिटै कर्म के अंक ।
कागज लीरैं‡ दरगह दईं चौदह कोर न चंप ॥३५॥
जम जोरा जा से डरै मिटै कर्म के रेख ।
अदली अदल कबीर है कुल के सतगुरु एक ॥३६॥
ऐसा सतगुरु हम मिला पहुंचा बंक निदान ।
नौका नाम चढ़ाय कर पार किये परवान ॥३७॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवसागर के माँह ।
नौका नाम चढ़ाय कर ले राखे निज ठाँह ॥ ३८॥
ऐसा सतगुरु हम मिला भवागसर के बीच ।
खेवट सब कूं खेवता क्या उत्तम क्या नीच ॥३९॥
चौरासी की धार में बहे जात हैं जीव ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ले परसाया पीव ॥४०॥

*जम गिनती में १४ हैं । †बल । ‡धज्जियाँ—अर्थ यह है कि कर्म के लेखे फट कर मालिक की दरगाह में दाखिल हो गये अब चौदह जम कोर नहीं दबा सकते ।

चौरासी की धार में बहे जात हैं हंस ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अलख लखाया बंस ॥४१॥
माया का रस पीय कर फूट गये दोउ नैन ।
ऐसा सतगुरु हम मिला बास दिया सुखचैन॥४२॥
माया का रस पीय कर होगये डावाँडोल ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग दिया खोल ॥४३॥
माया का रस पीय कर होगये भूत खबीस ।
ऐसा सतगुरु हम मिला भग्ति दई बकसीस ॥४४॥
माया का रस पीय कर फूट गये पट चार ।
ऐसा सतगुरु हम मिला लिये निसंक उधार ॥४५॥
माया का रस पीय कर डूब गये दुहुं* दीन ।
ऐसा सतगुरु हम मिला ज्ञान जोग परबीन ॥४६॥
माया का रस पीय कर भये सठ† गारत गोर‡ ।
ऐसा सतगुरु हम मिला परघट लिये बहोर ॥४७॥
सतगुरु कूं क्या दीजिये देवे को कछु नाँय ।
सम्मन|| को साका§ किया सेऊ|| भेट चढ़ाय ॥४८॥

---

*हिंदू और मुसलमान । †शठ=दुष्ट । ‡सत्यानास । §साका=शोहरत नाम । ||समन एक भक्त थे उनकी स्त्री जिसका नाम नेकी था और पुत्र जिसका नाम सेऊ था यह दोनों भी पक्के भक्त थे । एक समय कबीर साहब अपने चेलों कमाल और फ़रीद के साथ उनके स्थान पर पधारे । इन भक्तों के घर में न एक कौड़ी थी और न अन्न । बेचारे घबराये कि किस तरह ऐसे महात्माओं का सन्मान करें । इधर उधर माँगने गये कुछ नहीं मिला तब सेऊ की मा ने अपने पती और पुत्र से कहा कि जाकर कहीं अन्न की चोरी करो, पर दोनों पहिले तो रुके आखिर माता के समझाने से सेऊ तैयार हो गया और बाप भी साथ हो लिया । सेऊ एक बनिये के घर में

सिर साँटे* की भगति है और कछू नहिं बात ।
सिर के साँटे पाइये अविगत अलख अनाद ॥४९॥

सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु कूँ दान ।
मेरा मेरी छाँड़ दे यही गुप्त है दान ॥५०॥

सीस तुम्हारा जायगा कर सतगुरु की भेँट ।
नाम निरंतर लीजिये जम की लगै न फेट ॥५१॥

साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये साध ।
ये तीनौं अँग एक हैं गति कछु अगम अगाध ॥५२॥

साहब से सतगुरु भये सतगुरु से भये संत ।
घर घर भेष बिलास अँग खेलैं आद अरु अंत ॥५३॥

सैंध मार कर घुसा और कुछ अन्न चुरा कर लाया । बाप ने जो बाहर खड़ा था अन्न को देख कर कहा कि चोरी भी की तो इतना अन्न न लाये कि जिससे पूरा पड़े । इस पर सेऊ फिर बनिये के घर में घुसा । बनिया जाग पड़ा और सेऊ को पकड़ लिया । सेऊ ने बिनती की कि मेरा पिता बाहर खड़ा है मेरा पाँव बाँध कर डोरी अपने हाथ में रक्खो और मेरा सिर सेंध के छेद से बाहर निकाल दो जिस में मैं अपने पिता से दो बात कर लूं क्योंकि सबेरे तो मारा ही जाऊँगा । इस बात को बनिये ने मंजूर किया । सेऊ ने बाहर सिर निकाल कर पिता से कहा कि तुरंत मेरा सिर काट लो नहीं तो सबेरे जब पहिचाने जायँगे तो घर भर पकड़ा जायगा और साध सेवा में बिघ्न पड़ेगा । पिता ने ऐसाही किया और बेटे के सिर को काट कर घर में एक आले पर छिपाकर रख दिया और जो अन्न चोरी का मिला था उससे समन और नेकी ने भोजन बनाकर कबीर साहब और उनके दोनों चेलों के सामने धरा । कबीर साहब ने पूछा कि सेऊ कहाँ है वह भी आवे तो हम भोग लगावें । समन और नेकी जवाब देने में हिचकिचाये परंतु अंतर-जामी कबीर साहब ने सेऊ के सिर को मँगा कर अपना अमी रूपी प्रसाद उसके मुख में डाल कर जिला दिया ।

* बदले ।

ऐसा सतगुरु सेइये बेग उतारै पार ।
चौरासी भ्रम मेटई आवागमन निवार ॥५४॥
अंधे गूंगे गुरु घने लँगड़े लोभी लाख ।
साहब से परचै नहीं काव्य बनावैं साख* ॥५५॥
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द समाना होय ।
भवसागर में डूबते पार लगावै सोय ॥५६॥
ऐसा सतगुरु सेइये सोहं सिंधु मिलाप ।
तुरिया मध आसन करै मेटै तीनौं ताप ॥५७॥
तुरिया पर पुरिया† महल पार ब्रह्म का देस ।
ऐसा सतगुरु सेइये सब्द-बिज्ञाना नेस‡ ॥५८॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का धाम ।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस करै निःकाम ॥५९॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का लोक ।
ऐसा सतगुरु सेइये हंस पठावै मोख§ ॥ ६० ॥
तुरिया पर पुरिया महल पार ब्रह्म का दीप ।
ऐसा सतगुरु सेइये राखै संग समीप ॥ ६१ ॥
गगन मँडल गादी जहाँ पार ब्रह्म का धाम ।
सुन्न सिखर के महल में हंस करै बिस्राम ॥६२॥
सतगुरु पूरन ब्रह्म है सतगुरु आप अलेख ।
सतगुरु रमता राम है या में मीन न मेख ॥ ६३ ॥
सतगुरु आदि अनादि है सतगुरु मध अरु मूल ।
सतगुरु कूँ सिजदा करूँ एक पलक नहिं भूल ॥ ६४ ॥

*कवित्त और साखी । †बनाया । ‡नेहावान । §मोक्ष ।

पट्टन घाट लखाइया अगम भूमि का भेद ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल छेद ॥६५॥

पट्टन घाट लखाइया अगम भूम का भेव ।
ऐसा सतगुरु हम मिला अष्ट कमल दल सेव ॥६६॥

पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया मोय ।
सिर साँटे सौदा हुआ अगली पिछली खोय ॥६७॥

पुर पट्टन की पैंठ में सतगुरु लेगया साथ ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं पारस लागा हाथ ॥ ६८ ॥

पुर पट्टन की पैंठ में है सतगुरु की हाट ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं सौदा मरनोँ साँट ॥ ६९ ॥

पुर पट्टन की पैंठ में सौदा है निज सार
हम कूँ सतगुरु लेगया औघट घाट उतार ॥ ७० ॥

पुर पट्टन की पैंठ में प्रेम पियाले खूब ।
जहँ हम सतगुरु लेगया मतवाला महबूब ॥ ७१ ॥

पुर पट्टन की पैंठ में मतवाला मस्तान ।
हम कूँ सतगुरु लेगया अमरापुर अस्थान ॥ ७२ ॥

बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
मानसरोवर हंस है बानी कोकिल कीर* ॥७३॥

बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
जहँ हम सतगुरु लेगया चवे‡ अमी रस छीर ॥७४॥

बंकनाल के अंतरे तिरबेनी के तीर ।
जहँ हम सतगुरु लेगया बंदीछोर कबीर ॥ ७५ ॥

*तोता । †टपकता है ।

भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख ।
ऐसा सतगुरु मिल गया सौदा रोकम रोक* ॥७६ ॥

भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस तोल ।
ऐसा सतगुरु मिल गया बजर पौरि दइ खोल ॥७७॥

भँवर गुफा में बैठ कर अमी महा रस जोख ।
ऐसा सतगुरु मिल गया लेगया हम परलोक ॥७८ ॥

पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिंधु समाध ।
ऐसा सतगुरु मिल गया देखा अगम अगाध ॥७९ ॥

पिंड ब्रह्मंड से अगम है न्यारी सिंधु समाध ।
ऐसा सतगुरु मिल गया दिया अछय परसाद ॥ ८० ॥

औघट घाटी ऊतरे सतगुरु के उपदेस ।
पूरन पद परकासिया ज्ञान जोग परबेस ॥ ८१ ॥

सुन्न सरोवर हंस मन न्हाये सतगुरु भेद ।
सुरत निरत परचा भया अष्ट कमल दल छेद ॥८२॥

सुन बेसुन से अगम है पिंड ब्रह्मंड से न्यार ।
सब्द समाना सब्द में अवगत वार न पार ॥ ८३ ॥

सतगुरु कूँ कुरबान जाँ अजब लखाया देस ।
पारब्रह्म परवान है निरालंब निज बेस ॥ ८४ ॥

सतगुरु सोहं नाम दे गुह्य† बीज बिस्तार ।
बिन सोहं सीझै‡ नहीं मूल मंत्र निज सार ॥ ८५ ॥

सोहं सोहं धुन लगे दरद मंद दिल माहिं ।
सतगुरु परदा खोलहीं परा लोक लेजाहिं ॥ ८६ ॥

---

*नक़दा नक़दी । †गुह्य । ‡पैवस्त न हो ।

सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न ।
चढ़ै महल सुख सेज पर जहाँ पाप नहिं पुन्न ॥८७॥
सोहं जाप अजाप है बिन रसना है धुन्न ।
सतगुरु दीप समीप है नहिं बस्ती नहिं सुन्न ॥८८॥
सुन बस्ती से रहित है मूल मंत्र मन माहँ ।
जहँ हम सतगुरु लेगया अगम भूमि सत ठाँह ॥८९॥
मूल मंत्र निज नाम है सुरत सिंधु के तीर ।
गैबी बानी अरस* में सुर नर धरै न धीर ॥ ९० ॥
अजब नगर में लेगया हम कूँ सतगुरु आन ।
झलकै बिंब अगाध गत सूतै चादर तान ॥ ९१ ॥
अगम अनाहद दीप है अगम अनाहद लोक ।
अगम अनाहद गमन है अगम अनाहद मोख॥९२
सतगुरु पारस रूप है हमरी लोहा जात ।
पलक बीच कंचन करै पलटै पिंडा गात ॥९३॥
हम तो लोहा कठिन हैं सतगुरु बने लोहार ।
जुगन जुगन के मोरचे तोड़ गढ़े घन सार ॥९४॥
हम पसुआ-जन† जीव हैं सतगुरु जात भिरंग† ।
मुरदे से जिन्दा करैं पलट धरत हैं अंग‡ ॥ ९५ ॥
सतगुरु सिकलीगर बने यह तन तेगा देह ।
जुगन जुगन के मोरचे खोवैं भरम सँदेह ॥ ९६ ॥

---

*मुसलमानों में नवें यानी सब से ऊँचे स्वर्ग का नाम ।
†नरपशु । ‡जैसे भृंगी (भ्रमरी) झींगुर वग़ैरह को मार कर अपने खौता में उस पर बैठ कर अपने भौंकार शब्द से जिला कर उसको अपना ऐसा रूप वाला बना लेती है ।

सतगुरु कंद कपूर हैं हमरी तिनका देह ।
स्वाँति सीप का मेल है चंद चकोरा नेह ॥९७॥
ऐसा सतगुरु सेइये बेग उधारै हंस ।
भवसागर आवे नहीं जोरा काल बिधंस ॥९८॥
पट्टन नगरी घर करै गगन मंडल गहनार ।
अललपंख ज्यौं संचरै सतगुरु अधम उधार ॥९९॥
अललपंख अनुराग है सुन्न मँडल रह थीर ।
दास गरीब उधारिया सतगुरु मिले कबीर ॥१००॥

सुमिरन का अंग

ऐसा अविगत राम है आदि अंत नहिं कोय ।
वार पार की मत नहीं अचल निरंतर सोय ॥१॥
ऐसा अविगत राम है अगम अगोचर नूर ।
सुन्न सनेही आदि है सकल लोक भरपूर ॥२॥
ऐसा अविगत राम है गुन इंद्री से न्यार ।
सुन्न सनेही रम रहा दिल अंदर दीदार ॥३॥
ऐसा अविगत राम है अपरंपार अलाह ।
कादिर कूँ कुरबान है वार पार नहिं थाह ॥४॥
ऐसा अविगत राम है कादिर आप करीम ।
मेरा मालिक मेहरबाँ रमता राम रहीम ॥५॥
अल्लह अविगत राम है बेचगून* चित माहिं ।
सब्द अतीत अगाध है निरगुन सरगुन नाहिं ॥६॥

* बेचून ।

अल्लह अविगत राम है बेचगून निरबान ।
मेरा मालिक है सही महल मढ़ी नहिं थान ॥७॥
अल्लह अविगत राम है निराधार आधार ।
नाम निरंतर लीजिये रोम रोम की लार ॥८॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद ।
नाम निरंतर लीजिये ध्यान चकोरा चंद ॥९॥
अल्लह अविगत राम है कीमत कही न जाय ।
नाम निरंतर लीजिये मुख से कहि न सुनाय ॥१०॥
अल्लह अविगत राम है निरबानी निरबंद ।
नाम निरंतर लीजिये हिलमिल मीन समुँद ॥११॥
दुहूं दीन मध ऐव है अलह अलख पहिचान ।
नाम निरंतर लीजिये भगत हेत उत्पान ॥१२॥
अष्ट कमल दल राम है बाहर भीतर राम ।
पिंड हाड़ में राम है सकल ठौर सब ठाम ॥१३॥
सकल बियापी सुरत में मन पवना गहि राख ।
रोम रोम धुन होत है सतगुरु बोले साख ॥१४॥
मूल कमल में राम है स्वाद चक्र मैं राम ।
नाभि कमल में राम है हृदय कमल बिस्राम ॥१५॥
कंठ कमल में राम है त्रिकुटि कमल में राम ।
सहस कमल दल राम है सुन बस्ती सब ठाम ॥१६॥
अचल अभंगी राम है गलताना दम लीन* ।
सुरत निरत के अंतरे बाजे अनहद बीन ॥१७॥

* सहज ।

राम कहा तो क्या हुआ उर में नहीं यकीन ।
चोर मुसै घर लूटहीं पाँच पचीसो तीन ॥१८॥
राम कहंते राम है जिन के दिल हैं एक ।
बाहर भीतर रमि रहा पूरन ब्रह्म अलेख ॥१९॥
राम नाम निज सार है मूल मंत्र मन माहिं ।
पिंड ब्रह्मंड से रहित है जननी जाया नाहिं॥२०॥
राम रटत नहिं ढील कर हर दम नाम उचार ।
अमी महा रस पीजिये बहुतक बारंबार ॥२१॥
कोट गऊ जे दान दे कोट जज्ञ जेवनार ।
कोट कूप तीरथ खनै* मिटै नहीं जम मार ॥२२॥
कोटिन तीरथ ब्रत करै कोटिन गज कर दान।
कोटि अस्व बिप्रों दिये मिटै न खैंचा तान॥२३॥
पारबती के उर धरा अमर भई छिन माहँ ।
सुक की चौरासी मिटी निरालंब निज नाम† ॥२४
अगम अनाहद भूमि है जहाँ नाम का दीप।
एक पलक बिछुरै नहीं रहता नैनौं बीच ॥२५॥
साहब साहब क्या करै साहब है परतीत ।
भैंस सींग साहब भया पाँड़े गावैं गीत‡ ॥२६॥

---

*खोदे ।

†देखो नोट साखी नंबर २-६ "साध महिमा का अंग" [आगे] ।

‡एक पाँड़े किसी महात्मा के पास उपदेश लेने गये। महात्मा ने पूछा तुम किसको सब से अधिक प्यार करते हो । पाँड़े बोले एक भैंस को जिसे हम ने पाला है। महात्मा ने कहा कि उसी का ध्यान किया करो । पाँड़ेजी गुरू के कथन अनुसार अपनी भैंस के ध्यान में लीन हो गये यहाँ तक कि उनको ध्यान में भैंस नज़र आने.

राम सरीखा राम है संत सरीखे संत।
नाम सरीखा नाम है नहीं आदि नहिँ अंत ॥२७॥
महिमा सुन निज नाम की गहे द्रोपदी चीर।
दुस्सासन से पचि रहे अंत न पाया चीर* ॥२८॥
सेत बँधा पाहन तिरे† गज पकड़े थे ग्राह‡।
गनिका चढ़ी बिमान में§ निरगुन नाम मलाह ॥२९॥

लगी। एक दिन महात्मा ने उनको ध्यान के समय बुलाया, पाँड़े आँख मूंदे हुए बोले कि महाराज मैं घोंची भैंस की सींग में फँस गया हूं किस तरह बाहर निकलूं। महात्मा ने ऐसी दृढ़ता ध्यान की देख कर दया से पाँड़े से भैंस का ध्यान छुड़ा कर मालिक के ध्यान में लगा दिया जिससे मालिक का मेला होगया।

*युधिष्ठिर पांडव, कौरवों के साथ जुआ खेलने में अपनी स्त्री द्रोपदी को हार गये तब दुस्सासन नामी कौरव ने द्रोपदी को सभा में नंगी करने के लिये उस की साड़ी खींची। ऐसे गाढ़ के अवसर पर द्रोपदी ने दीन होकर अपने इष्ट श्रीकृष्ण का स्मरण किया जिसके प्रताप से साड़ी इतनी बढ़ती गई कि दुस्सासन खींचते २ हार गया पर उसका अंत न पाया।

†लँका और हिन्दुस्तान के बीच में समुद्र पर पुल बांधने के लिये बन्दर लोग राम नाम लिखकर समुद्र में पत्थर फेंकते थे जो नाम के प्रभाव से तैरते थे और इस तरह पुल तैयार होगया।

‡किसी नदी में एक हाथी को जो नहाने उतरा था मगर पकड़ कर खींचे लिये जाता था, हाथी ने भगवान को टेरा तब उन्होंने प्रगट होकर उसको उबारा।

§एक बेश्या को मरते समय जम दूत सता रहे थे कि एक साधू आगये। बेश्या ने अति बिलाप कर उन से रक्षा माँगी। साधूजी ने उसे मंत्र उपदेश का अधिकारी न समझ कर कहा कि वह नाम लो जो तोते को पढ़ाते हैं। बेश्या ने राम नाम लिया और उसके उच्चारन करते ही बिमान आया जिस पर चढ़ कर वह बैकुंठ को सिधारी।

बरदी ढरी कबीर के भग्ति हेत के काज* ।
सेऊ कूँ तो सिर दिया बेच बन्दगी नाज† ॥ ३० ॥

कहँ गोरख कहँ दत्त थे कहँ सुकदे कहँ ब्यास ।
भग्ति हेत से जानिये तीन लोक परकास ॥३१॥

कहँ पीपा कहँ नामदेव कहाँ धना बाजीद ।
कहँ रैदास कमाल थे कहँ थे फकर फरीद ॥३२॥

कहँ नानक दादू हुते कहँ ज्ञानी हरिदास ।
कहँ गोपीचँद भरथरी ये सब सतगुरु पास ॥३३॥

कहँ जंगी चरकट हुते कहाँ अधम सुलतान ।
भगति हेत परगट भये सतगुरु के परवान ॥३४॥

कहँ नारद प्रहलाद थे कहँ अंगद कहँ सेस ।
कहाँ बिभीखन ध्रुव हुते भगति हिरंबर पेस ॥३५॥

कहँ जयदेव थे कपिल मुनि कहँ रामानँद साध ।
कहँ दुरबासा कृस्न थे भगती आद अनाद ॥३६॥

कहँ ब्रह्मा अरु बेद थे कहँ सनकादिक चार ।
कहँ संभू अरु बिस्नु थे भगति हेत दीदार ॥ ३७ ॥

ऐसा निरमल नाम है निरमल करै सरीर ।
और ज्ञान मँडलीक‡ हैं चकवै§ ज्ञान कबीर ॥३८॥

---

*देखो नोट साखी नंबर १० भक्ति का अंग " (आगे) । †देखो नोट सफ़हा १५-१६ । ‡छोटे २ मंडल के राजा । §चक्रवर्ती राजा ।

राम नाम सदने पिया बकरे के उपदेस* ।
अजामील से उद्धरे भगति बंदगी पेस† ॥३९॥
नाम जलंधर‡ ने लिया पारा रिष परवान ।
धन सतगुरु दाता धनी दई बंदगी दान ॥४०॥
गगन मंडल में रहत है अबिनासी आलेख ।
जुगन जुगन सतसंग है घर घर खेलै भेख ॥४१॥
काया माया खंड है खंड राज अरु पाट ।
अमर नाम निज बंदगी सतगुरु से भइ साँट ॥४२॥

---

*सदन जाति के कसाई एक भारी भक्त हुए हैं। कहते हैं कि एक बार उनके घर ऐसे समय पाहुन आया जब घर में माँस न था। सदन ने चाहा कि एक बकरे का छोटा अंग काट के काम चला लिया जाय इस पर बकरा बोला कि हमारे तुम्हारे सिर काटे का बैर चुकना है सो काट लो और अंग नहीं काट सकते, यह सुन कर सदन को ज्ञान आया और तब से आप जीव नहीं मारते थे बाज़ार से माँस मोल लेकर बेचते थे और एक सालिगराम की बटिया से जो जितना माँगे तौल देते थे। कथा है कि एक दिन एक ब्राह्मन सालिगराम की बटिया की ऐसी दुर्दशा देख कर सदन से माँग कर अपने घर लाया और प्रान प्रतिष्ठा करके उस को सिंहासन पर पधारा। रात को सालिगराम ने सुपना दिया कि हमको हमारे भक्त के पास जहाँ से लाया है पहुंचा दे हम वहीं प्रसन्न हैं।

†अजामिल जाति का ब्राह्मन था पर अति कुकर्मी। एक दिन भाग से उसे साध सेवा मिली और उस ने दीनता करी जिस पर साध महात्मा ने बर दिया कि तुझको बेटा होगा उसका नाम नारायण रखना इससे तेरा कल्याण होजायगा। कुछ दिन पीछे बेटा हुआ और उस से अजामिल को ऐसी प्रीति हुई कि एक दम सामने से न हटाता था और मरते समय उसी का नाम नारायण रटता हुआ प्रान छोड़े और इस नाम के प्रताप से स्वर्ग में बासा पाया।

‡जलंधर एक राक्षस था जिसे श्रीकृश्न ने छल कर मारा और उन के प्रताप से उस को ऊँचा स्थान मिला।

अमर अनाहद नाम है निरभय अपरंपार ।
रहता रमता राम है सतगुरु चरन जुहार ॥४३॥
अबिनासी निःचल सदा करता कूँ कुरबान ।
जाप अजपा जपत है गगन मँडल धर ध्यान ॥४४॥
बिन रसना हू बंदगी बिन चस्में दीदार ।
बिन सरवन बानी सुनै निर्मल तत्त निहार ॥४५॥
मैं सौदागर नाम का टाँड़े पड़ा बहीर* ।
लदते लदते लादिये बहुर न फेरा† बीर ॥४६॥
नाम बिना क्या होत है जप तप संजम ध्यान ।
बाहर भरमै मानवी अभि अंतर में जान ॥४७॥
उजल हिरंबर भगति है उजल हिरंबर सेव ।
उजल हिरंबर नाम है उजल हिरंबर देव ॥४८॥
नाम बिना निपजै नहीं जप तप करिहैं कोट ।
लख चौरासी त्यार है मूड़ मुड़ाया घोंट ॥४९॥
नाम सरोवर सार है सोहं सुरत लगाय ।
ज्ञान गलीचे बैठ कर सुन्न सरोवर न्हाय ॥५०॥
मान सरोवर न्हाइये परमहंस का मेल ।
बिना चुँच मोती चुँगै अगम अगोचर खेल ॥५१॥
गगन मँडल में रमि रहा गलताना महबूब ।
वार पार नहिं छेव‡ है अविचल मूरत खूब ॥५२॥
ऐसा सतगुरु सेइये जो नाम दृढ़ावे ।
भरमी गुरुवा मत मिलो जो मूल गँवावे ॥५३॥

---

*बाज सामान । †आवागमन । ‡आकार, खंड ।

सोहं सुरत लगाय ले गुन इंद्री से बंच ।
नाम लिया तब जानिये मिटे सकल परपंच ॥५४॥
नामै निःचल निरमला अनँत लोक में गाज ।
निरगुन सरगुन क्या कहै प्रगटा संतों काज ॥५५॥
अबिनासी के नाम में कौन नाम निज मूल ।
सुरत निरत से खोज ले बास बड़ी अक* फूल ॥५६॥
फूल सही सरगुन कहा निरगुन गंध सुगंध ।
मन माली के बाग में भँवर रहा कहँ बंध ॥५७॥
भँवर बिलंबा केतकी सहस कमलदल माहिं ।
जहाँ नाम निज नूर है मन माया तहँ नाहिं ॥५८॥
पंडित कोटि अनंत हैं ज्ञानी कोटि अनंत ।
स्रोता कोटि अनंत हैं बिरले साधू संत ॥५९॥
जिन्ह मिलते सुख ऊपजै मेटैं कोटि उपाध ।
भवन चतुरदस ढूँढ़िये परम सनेही साध ॥६०॥
राम सरीखे साध हैं साध सरीखे राम ।
सतगुरु को सिजदा करूं जिन्ह दीन्हा निज नाम ॥६१॥
भगित बन्दगी जोग सब ज्ञान ध्यान परतीत ।
सुन्न सिखरगढ़ में रहै सतगुरु सब्द अतीत ॥६२॥
ऐसा सतगुरु सेइये पार उतारै हंस ।
भक्ति मुक्ति को देत है मिलि है सोहं बंस ॥६३॥
सोहं बंस बखानिये बिन दम देही जाय ।
सुरत निरत से अगम है लै समाध मरगाय ॥६४॥

---

* कि, या । † बिलम रहा ।

सुरत निरत मन पवन पर सोहं सोहं होय ।
  सिव मंतर गौरी कहा अमर भई है सोय ॥६५॥
ररंकार तो धुन लगै सोहं सुरत समाय ।
  हद बेहद पर बास हूै बहुरि न आवै जाय ॥६६॥
गुप्त* गायत्री नाम है बिन रसना धुन ध्याय ।
  महिमा सनकादिक लही सिवसंकर बल जाय ॥६७॥
अजब महल बारीक है अजब सुरत बारीक ।
  अजब निरत बारीक है महल धसे बिन बीक† ॥६८॥
ऐसा राम अगाध है अबिनासी गंभीर ।
  हद जीवों से दूर है बेहदियों के तीर ॥ ६९ ॥
ऐसा राम अगाध है बेकीमत करतार ।
  सेस सहस फन रटत है अजहुं न पाया पार ॥७०॥
ऐसा राम अगाध है अपरंपार अथाह ।
  उर में कृत्रिम ख्याल है मौला अलख अलाह ॥७१॥
ऐसा राम अगाध है निरभय निःचल पीर ।
  अनहद नाद अखंड धुन तन मन हीन सरीर ॥७२॥
ऐसा राम अगाध है बाजीगर भगवंत ।
  निरसँध निरमल देखिया वार पार नहिं अंत ॥७३॥
पारब्रह्म बिन परख है कीमत मोल न तोल ।
  बिना वजन अरु राग है बहुरंगी अनबोल ॥७४॥
महिमां अविगत नाम की जानत बिरले संत ।
  आठ वखत सुबिधान‡ है मुनि जन रटैं अनंत ॥७५॥

---

*गुप्त । †डर । ‡कमाई किये जाने लायक़ ।

चंद सूर पानी पवन धरनी पोल अकास ।
  पाँच तत्त हाजिर खड़े खिजमतदार खवास ॥७६॥
काल करम करे बंदगी महाकाल अरदास* ।
  मन माया अरु धरमराय सब सिर नाम उपास ॥७७॥
काल डरै करतार से मन माया का नास ।
  चंदन अँग पलटै सबै खाली रह गया बाँस† ॥७८॥
सजन सलोना राम है अब मत अंतहि जाय ।
  बाहर भीतर एक है सब घट रहा समाय ॥७९॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी एक ।
  आदि अंत जा के नहीं ज्यों का त्योंहीं देख ॥८०॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी एन ।
  महिमा कही न जात है बोलै मधुरे बैन ॥८१॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आद ।
  सतगुरु महरम तासु का साख भरत सब साध॥८२॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी पीर ।
  चरन कमल हंसा रहै हम हैं दामनगीर ॥८३॥
सजन सलोना राम है अचल अभंगी आप ।
  हद बेहद से अगम है जपते अजपा जाप ॥८४॥
एसा भगली जोगिया जानत है सब खेल ।
  बीन बजावै मोहनी जोग जंत्र सब मेल ॥८५॥
ब्रह्मादिक से मोहिया मोहे सेस गनेस ।
  संकर की तारी लगी अडिग समाध हमेस ॥८६॥

*अर्ज़दाश्त । †मलयाचल पर्बत में चंदन की सुगंध से सब बृक्ष चंदन सरीखे हो जाते हैं पर बाँस का बृक्ष सुगंधित नहीं होता है ।

गन गँधरप ज्ञानी गुनी अजब नवेला नेह ।
क्या महिमा कहुँ नाम की मिट गये सकल सँदेह॥८७॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे नैनों मंझ ।
अलख पलक में खलक में सतगुरु सब्द समंझ ॥८८॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे हिरदे माहिं ।
चंद सूर ऊगै नहीं निस बासर जहँ नाहिं ॥८९॥
सुन्न बिदेसी बस रहा हमरे त्रिकुटी तीर ।
संख परम छबि चाँदनी बानी कोकिल कीर*॥९०॥
सुन्न बिदेसी बस रहा सहस कमल दल बाग ।
सोहं ध्यान समाध धुन और तीब्र बैराग ॥९१॥
सुमिरन तब ही जानिये जब रोम रोम धुनि होय।
कुंज कमल में बैठ कर माला फेरे सोय ॥ ९२ ॥
सुरत सुमिरनी हाथ ले निरत मिले निरवान ।
ररंकार रमता लखै असल बन्दगी ध्यान ॥ ९३ ।
अष्ट कमलदल सुन्न है बाहर भीतर सुन्न ।
रोम रोम मैं सुन्न है जहाँ काल की धुन्न ॥ ९४ ॥
तुमहीं सोहं सुरत हौ तुमही मन अरु पौन ।
इस मैं दूसर कौन है आवै जाय सो कौन ॥ ९५ ॥
इस मैं दूसर कर्म है बँधी अविद्या गाँठ ।
पाँच पचीसो ले गई अपने अपने बाट ॥ ९६ ॥
नाम बिना सूना नगर पड़ा सकल मैं सोर ।
लूट न लूटी बंदगी होगया हंसा भोर ॥ ९७ ॥

* तोता ।

अगम निगम कूँ खोज ले बुद्धि बिबेक बिचार ।
उदय अस्त का राज दे तौ बिन नाम बिगार ॥९८॥

ऐसा कौन अभागिया करै भजन कूँ भंग ।
लोहे से कंचन भया पारस के सतसंग ॥ ९९ ॥

भक्ति का अंग ।

पारस तुम्हरा नाम है लोहा हमरी जात ।
जड़ सेती जड़ पलटिया तुम कूँ केतिक बात ॥१॥

बिना भगति क्या होत है ध्रू* कूँ पूछे जाहि ।
सवासेर अन्न पावते अटल राज दिया ताहि ॥२॥

बिना भगति क्या होत है कासी करवत† लेह ।
मिटै नहीं मन बासना बहु बिधि भरम सँदेह ॥ ३॥

भगति बिना क्या होत है भरम रहा संसार ।
रत्ती कंचन पाय नहिं रावन चलती बार‡ ॥ ४॥

---

*ध्रुव राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी के पुत्र थे जो अपनी छोटी रानी को अधिक चाहता था। एक बार अपने पिता की गोद में जाकर बैठे जिस पर छोटी रानी ने यह कह कर उठा दिया कि तुम्हारा ऐसा पुण्य नहीं है कि इस गोद में बैठो। ध्रुव के कलेजे में यह बात लग गई और घर से निकल गये और नारद जी के उपदेश से मालिक की भक्ति करके तारागण में सब से ऊँचा और अचल लोक पाया।

†काशी में काशी करवत एक स्थान है जहाँ एक कुएँ में आरे लगे थे और लोग उस पर मुक्ति के हेतु कट मरते थे।

‡कहते हैं कि लंका सोने की बनी थी लेकिन रावन जो राम-द्रोही था मरते समय ख़ाली हाथ गया।

संग सुदामा संत थे दारिद् का दरियाव ।
कंचन महल बकस दिये तंदुल भेंट चढ़ाव* ॥५॥
दो कौड़ी का जीव था सेना जात गुलाम ।
भक्ति हेत गृह आइया धरा सरूप हजाम† ॥६॥
पीपा को परचा हुआ मिले भक्त भगवान ।
सीता मग जोवत रही द्वारावती निधान‡ ॥७॥

*सुदामा श्रीकृष्ण के गुरु-भाई थे परन्तु महा दरिद्र । एक बार अपनी स्त्री के कहने से कुछ चावल श्रीकृष्ण की भेट के लिये लेकर उनसे मिलने गये । श्रीकृष्ण ने आदर सत्कार तो बहुत किया पर ज़ाहिर में कुछ दिया नहीं । जब सुदामा घर को लौटे तो देखा कि उनका कच्चा झोपड़ा सोने का महल बन गया है ।

†किसी राजा के यहाँ सेना नाऊ भक्त हजामत बनाने की नौकरी पर था । एक दिन हजामत बनाने के लिये जा रहा था कि राह में साधू लोग मिल गये और वह साधु-सेवा में लग गया, उसके बदले भगवान आप उस राजा की हजामत बना आये ।

‡पीपा जी गागरौनगढ़ के राजा थे जो अपनी सीता नामक रानी के साथ साधू हो गये और स्वामी रामानन्द जी से उपदेश लिया । इन की प्रचंड भक्ति और महिमा का भक्तमाल में बहुत वर्णन लिखा है । जिस कथा का गरीबदास जी की इस साखी में इशारा है वह इस तरह पर है कि पीपा जी और उन की स्त्री सीता द्वारका को गये और वहाँ असली दिव्य द्वारका में पहुंच कर (जो समुद्र में डूब गई है) साक्षात श्रीकृष्ण का दर्शन पाने के हेतु एक दिन सीता के साथ समुद्र तट पर पहुंचे । यहाँ सीता को खड़ी कर पीपा जी आप समुद्र में कूद कर ग़ायब हो गये और सात दिन तक दर्शन का रस और भगवान की प्रसादी छाप अपने शरीर पर लेकर आज्ञानुसार समुद्र से बाहर निकले जहाँ सीता उनका रास्ता देख रही थी । पीपा जी ने यह छाप मंदिर के पुजारियों को सौंप कर आज्ञा की कि जो लोग इस छाप को अपने शरीर पर लगावेंगे वह भगवत पद पावेंगे ।

धना भगत की धुन लगी बीज दिया जिन्ह आन।
सूखा खेत हरा हुआ कंकर बोये जान* ॥ ८ ॥
रैदास रँगीला रंग है दिये जनेऊ तोड़।
जग्य ज्योनार चोले धरे इक रैदास इक गौड़† ॥९॥
माँझी मरद कबीर है जगत करै उपहास।
केसो बनजारा भया भगत बड़ाई दास‡ ॥ १० ॥

---

*धना भक्त के पिता ने अपने पुत्र को खेत बोने के लिये बीज देकर भेजा। उसी समय कुछ भूखे साधू आगये, उन्हें धना ने सब बीज दे दिया और बाप के डर के मारे खेत में कंकड़ बो दिये (एक जगह ऐसा लिखा है कि साधुओं के तुम्बों के बीज बो दिये) फिर जाकर पिता को ख़बर दी कि खेत बो दिया। कुछ दिन पीछे पिता को नौकरों से असल हाल मालूम हो गया और बड़े क्रोध में खेत पर गये पर वहाँ पहुंच कर क्या देखा कि अन्न का खेत खूब लहलहा रहा है।

† चित्तौड़ की रानी ने जो रैदास जी की चेली थी एक बार काशी में किसी उत्सव पर गौड़ ब्राह्मणों को न्योता दिया। ब्राह्मणों ने इनकार किया कि वह चमार की चेली है हम उस के यहाँ भोजन नहीं कर सकते। इस पर रैदास जी ने उन लोगों को समझाया कि राज धान्य में दोष नहीं है और हम कुछ उसे छूने न जायँगे फिर कौन सा झगड़ा है। ब्राह्मण लोग क़ायल होकर राज़ी हो गये। जब खाने को बैठे और थोड़ा बहुत खा चुके तो देखते क्या हैं कि पंगत में हर ब्राह्मण के इधर उधर एक एक रैदास (चमार) है। ब्राह्मणों ने घबरा कर खाने से हाथ खींच लिया उस पर रैदास जी ने समझाया कि डरो मत और नाख़ून से अपने काँधे की चमड़ी चीर कर दिव्य जनेऊ दिखा कर हँसते हुए वहाँ से चल दिये। इस महिमा को देख कर ब्राह्मणों ने फिर भोजन किया—[देखो जीवन-चरित्र रैदासजी की बानी में]।

‡ काशी के पंडित जो कबीर साहब से बहुत द्वेष रखते थे उन्हों ने एक बार नगर भर में यह मशहूर कर दिया कि आज कबीर के

सोहं ऊपर और है सत्त सुकृत इक नाम ।
  सब हंसों का बंस है सुन बस्ती नहिं गाम ॥११॥
सोहं ऊपर और है सुरत निरत का नाँव ।
  सोहं अंतर पैठ कर सत्त सुकृत लौ लाव ॥ १२ ॥
सोहं ऊपर और है बिना मूल का फूल ।
  जा की गंध सुगंध है ता को पलक न भूल ॥१३॥
सोहं ऊपर और है बिन बेली का कंद ।
  नाम रसायन पीजिये अबिचल अति आनंद॥१४॥
सोहं ऊपर और है कोउ का जाने भेव ।
  गोप गोसाईं गैब धुन ता की कर ले सेव ॥१५॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत धुन ध्यान ।
  चार जुगन की बंदगी एक पलक परमान ॥१६॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस ठौर ।
  संकर बकसा मिहर कर अमर भई तब गौर॥१७॥
सुरत लगै अरु मन लगै लगै निरत तिस माहिं ।
  एक पलक तहँ सँचरै कोटि पाप अघ जाहिं ॥१८॥
अविगत की अविगत कथा अविगत है सब ख्याल ।
  अविगत सों अविगत मिलै कर जोरै तब काल॥१९॥
अमर अनूपम आप है और सकल हैं खंड ।
  सूच्छम से सूच्छम सही पूरन पद परचंड ॥२०॥

यहाँ सब भूखों और कंगलो को पाँच पाँच सेर अन्न बटेगा, यह सुन कर हज़ारों आदमी की भीड़ उन के दरवाज़े पर जमा हुई। कबीर साहब चुपचाप किसी बहाने से बाहर चले गये और उनके पीछे भगवान बनजारे का रूप धरे बहुत से बैल अन्न से लदे हुए वहाँ छोड़ गये जो कंगलों को उन की आशा से अधिक बाँटा गया।

अधम उधारन भगति है अधम उधारन नावँ ।
अधम उधारन संत हैं जिनके मैं बल जावँ ॥२१॥
गज गनिका अरु भीलनी सेवरी प्रेम सहेत ।
केते पतित उधारिया सतगुरु गावै नेत ॥ २२ ॥
राम रसायन पीजिये यहि औसर यहि दाव ।
फिर पीछे पछतायगा चला चली हो जाव ॥२३॥
राम रसायन पीजिये चोखा फूल चुवाय ।
सुन्न सरोवर हंस मन पीया प्रेम अघाय ॥२४॥
कहता दास गरीब है बाँदी-जाद* गुलाम ।
तुम हो तैसी कीजिये भक्ति हिरंबर नाम ॥ २५ ॥

बिनती का अंग

साहब मेरी बीनती सुनो गरीब-निवाज ।
जल की बूंद महल रचा भला बनाया साज ॥१॥
साहब मेरी बीनती सुनिये अर्स अवाज ।
मादर पिदर करीम तू पुत्र पिता को लाज ॥२॥
साहब मेरी बीनती कर जोरूँ करतार ।
तन मन धन कुरबान है दीजै मोहिं दीदार ॥३॥
पाँच तत्त के महल मैं नौ तत का इक और ।
नौ तत से इक अगम है पारब्रह्म की पौर ॥४॥
सुरत निरत मन पवन-कूँ करो एकत्तर† यार ।
द्वादस उलट समोय ले दिल अंदर दीदार ॥ ५ ॥

*ख़ानाज़ाद । †इकट्ठा ।

चार पदारथ महल में सुरत निरत मन पौन ।
सिव द्वारा खुलि है जबै दरसै चौदह भौन ॥ ६ ॥
सील सँतोष बिबेक बुध दया धर्म इकतार ।
अकल यकीन इमान रख गही बस्तु निज सार॥७॥
साहब तेरी साहबी कैसे जानी जाय ।
त्रिसरेनू* से झीन है नैनों रहा समाय ॥ ८ ॥
अनँत कोटि ब्रह्मंड का रचनहार जगदीस ।
ऐसा सूच्छम रूप धर आन बिराजा सीस ॥९॥
साहब पुरुष करीम तूँ अविगत अपरंपार ।
पल पल माँहैं बंदगी निरधारों आधार ॥ १० ॥
दरदमंद दरवेस तूँ दिल दाना महबूब ।
अचल बिसंभर बस रहा सूरत मूरत खूब ॥ ११ ॥
साँस सुरत के मद्ध है न्यारा कभी न होय ।
ऐसा साछीभूत है सुरत निरंतर जोय ॥ १२ ॥
सुरत निरत से झीन है जगन्नाथ जगदीस
त्रिकुटी छाजे पुर रहै है ईसन का ईस ॥ १३ ॥
कोटि जग्य असुमेध कर एक पलक धर ध्यान ।
षट दल के री बंदगी नहीं जग्य उनमान ॥ १४ ॥
जित सेतीं दम ऊचरै सुरत तहाँई लाय ।
नाभी कुंडल नाद है त्रिकुटी कमल समाय ॥ १५ ॥
अठसठ तीरथ भरमना भटक मुआ संसार ।
बारह बानी †ब्रह्म है जाका करो बिचार ॥ १६ ॥

*तीन परमाणु का एक त्रिसरेणु होता है । † छः कमल पिंड के और छः ब्रह्मांड के ।

अठसठ तीरथ जाइये मेले बड़ा मिलाप ।
पत्थर पानी पूजते साध संत मिल जाप ॥ १७ ॥
सनकादिक सेवन करै सुकदे बोलै साख ।
कोटि ग्रन्थ का अरथ है सुरत ठिकाने राख ॥ १८ ॥
साहब तेरी साहबी कहा कहूं करतार ।
पलक पलक की दीठ में पूरन ब्रह्म हमार ॥ १९ ॥
एते करता कहाँ हैं वह तो साहब एक ।
जैसे फूटी आरसी टूक टूक में देख ॥ २० ॥
करौं बीनती बंदगी साहब पुरुष सुभान* ।
संख असंखो बरन है कैसे रचा जहान ॥ २१ ॥
साहब तेरी साहबी समझ परै नहिं मोहिं ।
एता रूप जहान जग कैसे सिरजा तोहिं ॥ २२ ॥
एक बीज इक बिंदु है एक महल इक द्वार ।
चरन कमल कुरबान जाँ सिरजे रूप अपार ॥२३ ॥
मौला जल से थल करै थल से जल कर देत ।
साहब तेरी साहबी स्याम कहूं की सेत ॥ २४ ॥
साहब मेरा मिहरबाँ सुनिये अरस अवाज ।
पंजा राखो सीस पर जमहीं होत तिरास ॥ २५ ॥
मादर पिदर परान तूं साहब समरथ आप ।
रोम रोम धुन होत है सब्द सिंधु परकास ॥ २६ ॥
तन मन धन जगदीस का रती सुमेर समान ।
मिहर दया कर मुझ दिया तन मन वारौं प्रान ॥ २७ ॥

*पवित्र ।

यह माया जगदीस की अपनी कहैं गँवार ।
जमपुर धक्के खायँगे नाहक करैं बिगार ॥ २८ ॥
रावन के सँग ना चली लंक भभीखन दीन ।
यह माया अपनी नहीं सुनो संत परबीन ॥ २९ ॥
काया अपनी है नहीं माया कहाँ से होय ।
चरन कमल में ध्यान रख इन दोनों को खोय ॥३०॥
ये तो जान अनीत हैं काया माया काल ।
इन दोनों के मद्ध है सोहं संब्द रसाल ॥ ३१ ॥
ओं अरु सोहं सार है मूल फूल परबेस ।
सिव ब्रह्मादिक रटत हैं ध्यान धरत है सेस ॥३२॥
मैं समरथ के आसरे दमक दमक करतार ।
गफलत मेरी दूर कर खड़ा रहूं दरबार ॥ ३३ ॥
सुनो पुरुष मेरी बीनती साहब दीन-दयाल ।
पतित-उधारन साइयाँ तुम हो नजर निहाल ॥ ३४ ॥
समरथ का सरना लिया ताहि न चाँपै काल ।
पारब्रह्म का ध्यान धर होत न बाँका बाल ॥ ३५ ॥
नागदमन* निरगुन जड़ी ऐसा तुम्हरा नाम ।
तच्छक तीछा डरत है हर दम जप ले नाम ॥ ३६ ॥
आतम इंद्री कारने मत भटकावे मोहिं ।
जगन्नाथ जगदीस गुरु सरना आया तोहिं ॥ ३७ ॥
चरन कमल के ध्यान से कोटि बिघन टल जाँहि ।
राजा होवै लोक का जहाँ परै हुम† छाँहि ॥ ३८ ॥

---

*नाग साँप की जड़ी का । †हुमा चिड़िया जिस की निस्बत कहते हैं कि उस का साया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है ।

हुमा छाँह जा पर परै पिरथी-नाथ कहाय ।
पसु पंछी आदम सबै सनमुख परखै ताय ॥ ३९ ॥
दिव्य-दृष्टि देवा दयाल सतगुरु संत सुजान ।
तिरलोकी के जीव कूँ परख लेत परवान ॥४०॥
अगले पिछले जन्म कूँ जानत है जगदीस ।
मुंडमाल सिव के गले पहिर रहे ज्यौं ईस* ॥४१॥
करुनामई करीम जप अलह अलख का ध्यान ।
सत्त पुरुष सुख सिंधु में जपत समाने प्रान ॥४२॥
दम सूं दम कूँ समझ ले उठत बैठ आराध ।
रंचक ध्यान समान सुध पूरन सकल मुराद ॥४३॥
अर्ध नाम कुंजर जपा भया ग्राह से पार† ।
उभय घड़ी खट्वाँग जप ऐसा नाम उचार‡ ॥४४॥
अनंत कोटि ब्रह्मॉंड में बटक§ बीज बिस्तार ।
सुरत सरूपी पुरुष है तन मन धन सब वार ॥४५॥
सुन्न सपेदा स्याम है भूर भद्र बैराट ।
तिल प्रमान में पैठ कर उतरो औघट घाट ॥४६॥

---

*एक समय पारबतीजी ने शिवजी से पूछा कि यह मुंडमाल जो आप पहिने हुए हैं उस में किन २ के सिर हैं । शिव जी बोले कि तुम हम को इतनी प्रिय हो कि जितने जन्म तुमने धरे हैं तुम्हारे हर एक शरीर का मुंड मैं ने अपने गले में डाल रक्खा है ।

† देखो नोट पृष्ठ (२४) ।

‡ राजा खट्वांग से किसी समय में देवता लोगोँ ने अति प्रसन्न होकर कहा कि जो चाहो सो बरदान माँगो । राजा बोले पहिले यह बतलाइये मेरी उमर कितनी बाक़ी है । देवताओं ने कहा सिर्फ़ दे। घड़ी और जियोगे । यह सुन कर राजा ने अपने चित्त को एकाग्र कर परमेश्वर का नाम जपना शुरू किया और दोही घड़ी में अपना काम बना लिया । §बड़ का पेड़ ।

रतन अमोली फूल है सो साहब के सीस ।
जो रँग नाहीं स्रिष्टि में देखा बिस्वे बीस ॥४७॥
कोटि ध्यान असनान कर कोटि जोग बैराग ।
कोटि कुटुँब गृह तज गये दरसत ना अनुराग॥४८॥
राग* रूप रघुबीर है छाँह धूप से न्यार ।
सात स्वर्ग पर सो तपै कैसे हो दीदार ॥ ४९ ॥
सतगुरु अर्थ† बिवान है हिरदे बैठा आय ।
जब वा खोलै चाँदनी पल में देह लखाय ॥५०॥
सतगुरु के सदके करूँ अनँत कोटि ब्रह्मंड ।
निरगुन नाम निरंजना मेटत है जम दंड ॥५१॥
सतगुरु के सदके करूँ तन मन धन कुरबान ।
दिल के अंदर देहरा तहाँ मिले भगवान ॥५२॥
दिल के अंदर देहरा जा देवल में देव ।
हर दम साखी-भूत है करो तासु की सेव ॥५३॥
जल का महल बनाइया धन समरथ साँईं ।
कारीगर कुरबान जाँ कुछ कीमत नाँईं ॥५४॥
कोटि जतन कर राखिया जठरा के माईं ।
गर्भ बास की बीनती सुनि पुरुष गुसाईं ॥५५॥
नैन नाक मुख स्रवन लै सब साज बनाया ।
दस्त चरन चिन्तामनी परिपूरन काया ॥ ५६ ॥
कली कली कर जोड़िया नाड़ी निरवाना ।
दस सहस्र का बन्ध लाय नाभी असथाना ॥५७॥

*प्रेम । †वस्तु

तालू कंठ भिरकुटी रसना मुख माईं ।
दाढ़ अरु दंत बनाइया घन अलख गुसाईं ॥५८॥
पलकौं के छज्जे बने मुँह महल मुँडेरे ।
जै जै जै जगदीस तूँ घन साहब मेरे ॥ ५९ ॥
ग्रीवा* हाड़ी रुधिर में ले संधि मिलाई ।
ऊपर चाम लपेट कर नख रोम बनाई ॥६०॥
तलुवे एँड़ी आँगुली पिंडरी परवाना ।
जोड़े जाँघ बनाइया कादिर कुरबाना ॥६१॥
कमर करंक† करीम ने क्या जोड़ लगाई ।
नस नाड़ी का बँध दे गिरह गाँठ बँधाई ॥६२॥
पेट पीठ पूरन किये परमानँद स्वामी ।
भुजा खवे कुहनी बनी समरथ घन नामी ॥६३॥
आँत उदर में राख कर क्या परदा कीन्हा ।
एक द्वार दो देहरी अन जल का सीना ॥६४॥
अष्ट कमल दल आरती हर दम हर होई ।
नाभि कमल में प्रान नाथ राखे निरमोई ॥६५॥
माया की बुरकी‡ पड़ी मारग नहिं पावै ।
दस इंद्री लारै लगी अब कौन छुटावै ॥ ६६ ॥
वड़वा नल का द्वार है नाभी के नीचे ।
जो सतगुरु भेदी मिलै तहँ अमृत सींचे ॥ ६७ ॥
जठर अगिन जा कूँ कहैं जो छूधा लावै ।
जल से तिरखा ना मिटै कोइ भेदी पावै ॥ ६८ ॥

*गरदन । †हड्डी का पिंजर । ‡परदा

तीन पेच हैं कुँडलिनी नाभी के पासा ।
  जा के मुख से नीकले जल अगिन अकासा ।।६९।।
मल मूतर की कोथली* दो न्यारी कीन्ही ।
  दम का दगड़ा† गगन कूं ऐसा परबीनी ॥ ७० ॥
मन माया मौजूद है काया गढ़ माहीं ।
  बीच पुरंजन बसत है सो पावै नाहीं ॥ ७१ ॥
पाँच भार‡ जो आदि है जा के सँग डोलै ।
  तीन लोक कूँ खा गई मुख से नहिं बोलै ॥ ७२ ॥
बड़ी कुसंगन सुपचनी§ सुध बुध बिसरावै ।
  चिंता चेरी चूहरी§ नित नाद बजावै ॥ ७३ ॥
महा दरिद्र की गाँठ बाँध आगे धर देवै ।
  तीन लोक के चिंत कूँ निस बासर सेवै ॥ ७४ ॥
काम क्रोध रसिया जहाँ मद मोह मवासी ।
  लोभ लँगर‖ वहँ बटत है जहँ बारह मासी ॥ ७५ ॥
राग द्वेष रागी बड़े नित गावैं गीता ।
  हरष सोग हाजिर खड़े दो रहजन¶ मीता ॥ ७६ ॥
बीच पुरंजन बैठ कर बहु नाच नचावै ।
  लोक परगने बाँट कर बड़इच्छा** द्यावै ॥ ७७ ॥
आतम सिर आराधिया जो ध्यावहु ध्यावै ।
  कुबुध कलाली जारनी†† बिष प्याला प्यावै ॥ ७८ ॥
मनसा मालिन आन कर नित सेज बिछावै ।
  तहाँ पुरंजन बैठ कर नित भोग करावै ॥ ७९ ॥

---

*थैली । †रास्ता । ‡बोझ अर्थात तत्त्व । §भंगन । ‖सदावर्त । ¶बटमार । **बरिच्छा । ††बिभिचारनी ।

तीन लोक की मेदनी* सब हाजिर होई ।
मन रंगी के रंग में रंगा सब कोई ॥ ८० ॥
आसन असथल उठ गये कुछ पिंड न प्राना ।
फेर पुरंजन आनकर घाला घमसाना ॥ ८१ ॥
दुरमति दूती और है इक दारुन माया ।
जैसे काँजी† दूध में घृत खंड कराया ॥ ८२ ॥
द्वादस कोटि कटक चढ़े कुछ गिनती नाहीं ।
लालच नीचन की बहै जिन फौज़ाँ माहीं ॥ ८३ ॥
संसा सोच सराय में सूतक दिन राती ।
जीवतही जूती परैं जम तोरै छाती ॥ ८४ ॥
रहजन कोटि अनंत हैं काया गढ़ माहीं ।
ममता माया बिस्तरी तिर्गुन तन माहीं ॥ ८५ ॥
बाँकी फौज पुरंजना कुछ पार न पावै ।
मन राजा के राज में क्या भग्ति करावै ॥ ८६ ॥
मन के मारे मुनि बहे नारद से ज्ञानी ।
सिंगी रिषि पारासरा कीन्हे रजधानी ॥ ८७ ॥
चढ़े पुरंजन इंद्र पर कर धाई धाई ।
गौतम रिषि की इस्तरी सँग कीन्हा जाई‡ ॥ ८८ ॥
नारि अहल्या सूँ रते सुरपति से देवा
इंद्र सहस भग होगये कुछ ख्याल न भेवा‡ ॥ ८९ ॥

---

*पृथ्वी । †सिरका ।

‡एक बार देवराज इन्द्र का मन गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या को देख कर मोहित होगया, विचार किया कि यह सुन्दरी हम को कैसे प्राप्त हो क्योंकि सिवाय बड़े तड़के स्नान के हेतु और कभी ऋषि जी घर से बाहर जाते नहीं । तब आधी रात को मुरग़ा का रूप

दुरबासा पकरे गये सुरपति की नगरी ।
नारि उरबसी मोहिया मन माया सगरी* ॥९०॥
जो जीते सो जूझ के मन माया खाये ।
सिव जोगी भागे फिरे ले मदन चुराये ॥ ९१ ॥
जा के संग पुरंजनी महमत्ती† नारी ।
गुरू मछन्दर सिंगलदीप कीन्हे घर बारी‡ ॥९२॥

घर कुकरूँकूँ की आवाज़ दी। ऋषि जी यह समझ कर कि सबेरा होगया घबरा कर जागे और गंगा स्नान करने चले गये। इन्द्र गौतम का रूप धारण करके अहिल्या के पास आये और कहा कि अभी रात बहुत है स्नान की बेला नहीं है इस लिये हम लौट आये, यह कह कर अहिल्या के संग भोग किया। जाते समय गौतम जी भी पहुंच गये उनके देखते ही इन्द्र का कपट रूप उड़कर असल रूप प्रगट होगया। गौतम ऋषि ने श्राप देकर अहल्या को पत्थर कर दिया और इन्द्र के सब शरीर में एक हज़ार भग बना दिये।

*दुर्बासा ऋषि उर्बसी अप्सरा पर मोहित हो कर उस के संग इन्द्र के यहाँ पकड़े गये। जब दुर्बासा के पिता अत्री ऋषि को यह हाल मालूम हुआ तब उन्हों ने इन्द्र से कह सुन कर दुरबासा को छुड़ाया।

†ज़बरदस्त ।

‡गोरखनाथ के गुरू मछन्दरनाथ घूमते घूमते सिंगलदीप पहुंचे, वहाँ के राजा का देहांत होगया था उसकी देह में अपने तपोबल से जा समाये और बहुत काल तक राज और भोग बिलास किया और कई लड़के लड़की पैदा हुए। राजा के चोले में समाने के पहिले उन्हों ने अपने चेले गोरखनाथ को बचन दिया था कि बारह बरस में हम लौट आवेंगे पर जब वह समय आया तो राजा (मछन्दर नाथ) ने इस डर से कि कहीं गोरखनाथ आकर न सतावे कड़ा हुक्म जारी किया कि सिवाय नाचनेवालियों और उनके समाजियों के कोई महल में न घुसने पावे। यह हाल देख कर गोरखनाथ तबलची का रूप धर कर एक कसबी के साथ दरबार में घुसे और वहाँ मछन्दर-नाथ के सन्मुख पहुंच कर उन को चेताया जिस पर वह लज्जित हुए और तुर्त चोला त्याग कर अपने निज स्थान को फिर आये।

ब्रह्मा का आसन डिगा कुछ कही न जाई ।
जहाँ पुरंजन आनकर बड़ धूम मचाई ॥ ९३ ॥
राजा एक पुरंजना तिहुं लोक बड़े रा ।
सुर नर मुनि जन सब डरैं पकरे समसेरा ॥९४ ॥
तीन लोक ताखत* किये कुछ रही न बाकी ।
अव्वल बली बरियाम है चँद सूरज साखी ॥ ९५ ॥
नव औतार पुरंजना घर आये देही ।
ओहि रावन राघो भया मन माया येही ॥ ९६ ॥
हनूमान अरु जामवँत नल नील कहावै ।
अंगद अरु सुग्रीव कूँ रन माहिं जुझावै ॥ ९७ ॥
तीन लोक घानी घली मन माया नाँची ।
कंस केसि चाँडूर कूँ सिसुपाल न बाँची† ॥ ९८ ॥
रावन महिरावन मुए हिरनाकुस खाये ।
संखासुर से दलमले कहिँ खोज न पाये‡ ॥९९ ॥
सूरे§ सावन्त‖ मंडलीक¶ चकवै** सब खाये ।
चुनकट होयकर चुग लिये किन्ह भेद न पाये ॥१००॥
डरै पुरंजन एक से जो जाना जाई ।
निज मन का आरंभ कर सुरती लै लाई ॥१०१॥
सील संतोष बिबेक बुध समता जब आवै ।
दया धरम के चौतरे गुरुज्ञान सुनावै ॥ १०२ ॥

तभी की यह कहावत है कि गोरखनाथ ने तबले पर ऐसा बजाया था "जाग मछन्दर गोरख आया" ।

*जेर । †यह राजाओं और बीरों के नाम हैं जिनको श्रीकृष्णचन्द्र ने मारा । ‡राक्षसों के नाम जो औतार सरूपों के हाथ से मारे गये । §सूर । ‖बीर । ¶राजा । **चक्रवर्ती भूप ।

सील संतोष बिबेक से जा के दरबाना ।
  काम क्रोध भागे जबै गढ़ देखा सामाँ ॥ १०३ ॥
लोभ मोह मारे परे सेना सब भागी ।
  सतगुरु के परताप से जब आतम जागी ॥१०४॥
पुरुष पुरंजन पाकड़ा गढ़ घेरा जाई ।
  निज मन की फौजाँ धसीँ काया गढ़ माहीँ ॥१०५॥
अकल यकीन इमान रे मनसा भइ थीरं ।
  अजपा तारी धुन लगी जम कटे जँजीरं ॥१०६॥
थाक्यो मन पिंगल चढ़ा परवान परेवा* ।
  कोटि पदम की दामिनी गरजत बहु भेवा ॥१०७॥
प्रान अपान† समान कर सुरती लै लाई ।
  दुहु बर कोट ढहाइया अरु तहँ बड़ खाई ॥१०८॥
भरम बुरज भाने सबै सोलह सुर धाई ।
  सतरह सुरती हंसिनी सब खबरैं लाई ॥ १०९ ॥
चढ़ा बिहंगम नाद भर निरगुन निरबानी ।
  सिव साहब के लिंग पर गिर गंगा आनी ॥११०॥
मान तलाई मालवे‡ तिरबेनी तालं ।
  गंगा जमना सरसुती जब छुटी दयालं ॥१११॥
सिव साहब के लिंग पर तिरबेनी बूड़े ।
  कलमष§ कसमल कट गये सब बंधन छूटे ॥११२॥
परा नंद नित बूझहीँ दरबार हमारे ।
  अमृत की भाठी झरै कलमष कूँ जारै ॥ ११३ ॥

*कबूतर की तरह । †नीचे की वायु । ‡उपजाऊ देश । §पाप ।

ब्रह्म-रंध्र* का घाट है घट मठ से न्यारा ।
सुरति हंसनी चढ़ गई लख पूरब द्वारा ॥ ११४ ॥
सतगुरु मेरा महरमी काया घर आया ।
जिन्ह माटी के महल में निज ब्रह्म लखाया ॥११५॥
बाहर भीतर एक है पल जोड़े प्रानी ।
हिरदे ही में देख ले वह अगम निसानी ॥ ११६ ॥
सुन्न सलहला† पंथ है पद पारख लीजे ।
जटा कुंडली जाइये अमृत रस पीजे ॥ ११७ ॥
जटा कुंडली पर बसै सतपुरुष बनानी ।
जहँ समरथ का तख़्त है धुन अनहद बानी ॥११८॥
जहँ वहँ रहन कबीर की निज मंदिर महली ।
चढ़ै सही गिर गिर परै वह पंथ सलहली ॥११९॥
पैड़ी पंथ न पग धरन कैसे कर जाऊँ ।
मिला रहै अरु ना मिलै कहँ सुरत लगाऊँ ॥१२०॥
ऊँची भुमि अकास मठ जहँ जाय न कोई ।
सुरत निरत से अगम है धुन ध्यान समोई ॥१२१॥
दरस परस देवल धजा फरकै दिन राती ।
जोत अखंडित जगमगै दीपक बिन बाती ॥१२२॥
नभ से न्यारा नूर है झीने से झीना ।
ज्ञान ध्यान की गम नहीं परखै परबीना ॥१२३॥
संख कलप जुग होगये जो टरै न टारा ।
खड्ग बान बेधे नहीं है अधर अधारा ॥ १२४ ॥

*तीसरा तिल । †रपटीला ।

पत्थर में हीरा चलै धन धरती जानै ।
लाख लोग पासै खड़े दरसत पाषानै ॥ १२५ ॥
सात आवरन बेधिहै जो पावै हीरा ।
काया में से उड़ चले पलकौं के तीरा ॥ १२६ ॥
उरगन* हीरा गह लिया सुरती घर आना ।
सेत धजा देवल खिमै† जहँ कोट निसाना ॥१२७॥
कमल रूप करतार है नैनौं के माहीं ।
साती कमल सरीर में वह न्यारा साँई ॥१२८॥
जागत सोवत है नहीं कछु खाय न पीवै ।
चिरंजीव चिंतामनी जो बहु जुग जीवै ॥१२९॥
काल कर्म आगे खड़े लावै जिस लागै ।
भगली भगल उचारिहै बिद्या अनुरागै ॥१३०॥
काल कर्म आगे खड़े नित नाच कराहीं ।
भगली भावै सो करै जा की गम नाहीं ॥१३१॥
पलक बीच पैमाल‡ है सब खंड ब्रह्मंडा ।
अजब नबेली मेदनी§ छिन में परचंडा ॥१३२॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस से कंपैं दिन राती ।
निर्दावे‖ सोई भये जिस काल न खाती ॥१३३॥
अनंत कोटि ब्रह्मांड का चरबन कर लेई ।
महा काल की डाढ़ में आवे सब कोई ॥१३४॥

*साँप । †झलकै । ‡नाश । §पृथ्वी । ‖निर्भय ।

काल डरै करतार से कर बंधन जोड़ी ।
संख असंखौ चल गये सिव बिस्नु करोड़ी ॥१३५॥
अकल पुरुष साहब धनी अविगत अविनासी ।
गरीबदास सरना लिया काटो जम फाँसी ॥१३६॥

कुसंगत का अंग

कमल फूल मन भँवर है काँटा कर्म कुसंग ।
पाँच बिषय सूँ बँध रहा कैसे लागे रंग ॥ १ ॥
काया सरवर मीन मन दसौ दिसा कूँ जाय ।
बिषय लहर दिल देह में भगति न रंच* सुहाय ॥२॥
कुटिल बासना कमल† में पावत नहीं मुराद ।
मरजीया‡ मन कूँ करै जहँ पथ अगम अगाध ॥३॥
सुरभी§ बँधी चमार के ब्राह्मन बोई भाँग ।
चंदन खर के लेपिये कुंदन बदले राँग ॥ ४ ॥
कर्म कटारी बाँध के करै भारथी जंग‖ ।
अपने सिर लेवै नहीं प्राछित सौंपे गंग ॥ ५ ॥
तरन तारनी बकस दे हमरे प्राछित काट ।
पारब्रह्म सूँ ऊलझै परभी न्हावे घाट ॥ ६ ॥
बगुला हंसा एक सर एकै रूप रसाल ।
वह सरवर मोती चुगै वह मच्छी का काल ॥७॥
सीप पियत है स्वाँति कूँ-बिच है खारी नीर ।
माहैं मोती नीपजे करनी बंध सरीर ॥ ८ ॥

*कुछ । †हृदय । ‡गोताख़ोर । §गाय । ‖महाभारत सरीखी लड़ाई ।

नग फूटा बिकता नहीं सारा लीजै सोध ।
हीरा पत्थर में बसै धन धरती ले खोद ॥९॥
कदली माँह कपूर है गज मोती अँदरून ।
चुभक चिड़िया चाँच भर पैठे गज़ नाखून ॥१०॥
यों तो सतसँग तुझ कहा कुसँग कहूं भय भीत ।
स्वाँति पड़े जो सरप मुख करता जहर अनीत ॥११॥
भूम पड़े जैसा फलै सुर की संगत कीन ।
नीचन मुख नहिं देखना ना कोइ मिलै कुलीन ॥१२॥
लोहे चुम्बक प्रीतड़ी* दोनों जड़ जगदीस ।
चेतन चेतन तें मिलै ल्हीस मिलत है ल्हीस ॥१३॥
रूमी† बस्तर अंतरा लोहा पारस बीच ।
चार जुगन मेला नहीं रहते निकट नगीच ॥१४॥
ऐसा नीच न जान दे साहब के दरबार ।
समझत नहिं अज्ञान बुध लग रहे करम लगार ॥१५॥
करम भरम भारी लगे मनसा चंचल चाव ।
बुध बेधै नहिं सुरत खत महल न लगे लगाव ॥१६॥
पिंगल घाटी ना लखी हरफ‡ न लगी कसीस ।
ये दोनों परसिद्ध हैं लाल झमक्के सीस ॥१७॥
कौन कुसंगत ना लखा आड़ा परदा खोल ।
यह तन तालिब कूँ दिया माहँ रतन अमोल ॥१८॥
गदहा मिसरी प्याइये जा का योही काल ।
माखी घृत नहवाइये परसत ही पैमाल ॥१९॥

---

* प्रीत । † ऊन । ‡ नकुश, कर्म का लेखा ।